सम्पादकीय

क्रिसमस, मीडिया और गुरु गोविन्द सिंह के सुपुत्रों की शहादत

– डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

ऊपर से देखने पर शीर्षक के तीन अलग अलग घटकों में कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। लेकिन गहराई से पैठने पर इससे कई खतरनाक संकेत उभरते हैं। 24, 25, 26 दिसम्बर को देशभर में शहीदी जोड़ मेला मनाया जाता है। मुख्य कार्यक्रम तो पंजाब के फतेहगढ में ही होता है लेकिन देशभर में इस दिन उन दो बाल सुपुत्रों की शहादत को याद किया जाता है जिन्होंने धर्म की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। यह दिल हिला देने वाला साका आज से तीन सौ पाँच वर्ष पहले हुआ था । वे दो छोटे साहिबजादे, जिनमें से एक की आयु 8 वर्ष थी और दूसरे की 6 वर्ष, भारतीय दशगुरू परम्परा के दशम् गुरू श्री गोविन्द सिंह जी के सुपुत्र थे। उनमें से बडे का नाम बाबा जोरावर सिंह था और छोटे का नाम बाबा फतेह सिंह था। गुरू गोविन्द सिंह जी श्री आनन्दपुर साहिब का किला छोड कर जा रहे थे। किले को मुगल सेना ने कई दिनों से घेर रखा था। लेकिन दुर्भाग्य से मार्ग में आने वाली सरसा नदी की बाढ के कारण किनारे टूट रहे थे। गोविन्द सिंह जी का पूरा परिवार बिछुड़ गया। ये दोनों बच्चे खेडा गाँव में सुरक्षित पहुँचाये गये। वक्त के शासकों को किसी प्रकार किसी कमजोर कड़ी के चलते उनका भेद मालूम हो गयाा और वे सरहिंद के नवाब की कैद में पहुँच गये। उसके बाद वही हुआ जो ऐसे अवसरों पर इस्लाम के इतिहास में होता आया है। सरहिंद के शासक ने उन्हें अपना धर्म त्याग कर इस्लाम में दीक्षित हो जाने के लिए कहा। इसके लिए काजी–मुल्लाओं ने उन्हें प्रलोभन भी दिये और भय भी दिखाया। आम आदमी भय से समर्पण कर देता है और प्रलोभन से आकर्षित हो जाता है। शास्त्रकारों का कहना है– **धर्मो रक्षति रक्षतः** । जिसका अर्थ है धर्म उसी की रक्षा करता है जो धर्म की रक्षा करते हैं। धर्म की रक्षा करने का प्रश्न संकट काल में ही उत्पन्न होता है। जो संकट काल में अपने धर्म अर्थात् अपने कर्तव्य पर अड़िग रहता है वही इतिहास का निर्माण करता है। लेकिन इतिहास गवाह है कि ऐसे संकट काल में बडे बडे तपस्वी और शूरवीर भी डगमगा जाते हैं। बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह तो अभी बच्चे ही थे। काल की लीला विचित्र है उसने आज से 306 वर्ष पहले धर्म की रक्षा का यह उत्तरदायित्व इन बच्चों के कोमल कंधों पर डाल दिया था। मुगल शासक के दरबार में दूर दूर से लोग एकत्रित हुए थे। यह पूरे भारत की परीक्षा का समय था। भारत वर्ष के मूल्य और उसकी आस्थाओं की परीक्षा का समय था। लगता था, उस दिन सरहिंद में महा काल भी एक क्षण के लिए रूक गया था। बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह का उत्तर ही भारत का भविष्य तय करने वाला था। उन दोनों बालकों ने उस दिन जो उत्तर दिया उसकी प्रतिध्वनि देश के कोने कोने गूंजी । दक्षिण में सागर तट तक। उत्तर में हिमालय के शिखरों तक। दोनों बालकों ने धर्म का त्याग नहीं किया, बल्कि मृत्यु का वरण कर लिया। यह मृत्यु भी कोई साधारण मृत्यु नहीं थी। जिंदा ही दीवारों में चिनवाये जाने से प्राप्त होने वाली मृत्यु । सरहिंद में दोनों बालकों के इर्द गिर्द जैसे जैसे एक एक ईंट ऊपर उठती गई वैसे वैसे भारत भूमि का कण कण पावन होता गया। आज भी पूरा देश कृतज्ञता से दोनों साहिबजादों की शहादत को कृतज्ञता से स्मरण करता है ।

25 दिसम्बर को ही क्रिसमस का दिन होता है। आज से लगभग दो हजार साल पहले यरूशलम में एक बढई के घर एक कंवारी माँ ने एक बच्चे को जन्म दिया था जो बाद में क्राईस्ट के नाम से जाना गया । क्राईस्ट ने भी वक्त की सलतनत को चुनौती दी थी। इसलिए उसको भी हुकमरानों ने सूली पर लटका दिया था। इस कथा को लेकर विवाद भी चलता रहता है। यूरोप के भीतर भी बहुत से लोग क्राईस्ट की कथा पर ही विश्वास नहीं करते। दूसरों को उनकी मृत्यु कथा पर विश्वास नहीं है और तीसरे उनके शादी शुदा होने की कहानी सुनाते हैं। लेकिन उनकी मौत के सैंकडों साल बाद उनके अनुयायिओं ने चर्च के नाम से एक सशक्त संस्था खड़ी कर दी, जिसने अधिकांश यूरोपीय देशों की सत्ता पर कब्जा करके वहाँ उथल पुथल मचा दी। बाद में यूरोप के लोगों ने ही क्राईस्ट के नाम पर स्थापित चर्च की इस सत्ता को चुनौती दी और उसे उखाड़ फेंका।

कभी चर्च के साम्राज्य का परचम पूरे यूरोप में फहराता था। अब उसकी भौतिक सत्ता रोम के पास कुछ किलोमीटर के क्षेत्रफल के वेटिकन नाम के देश में ही सिमट कर रह गई । लेकिन चर्च ने हार नहीं मानी। उसने अफ्रीका और एशिया के गरीब लोगों को लालच के बल पर चर्च की शरण में लाने का अभियान छेड़ दिया और उसमें उसे बहुत हद तक सफलता भी मिली। 25 दिसंबर को चर्च क्रिसमस का दिन मनाता है। ईसा मसीह के दुनिया में आने का दिन। महात्मा गांधी ने कभी कहा था कि आज के चर्च में ईसा मसीह ही नहीं है बाकी सब कुछ है। यदि आज ईसा मसीह जिंदा होते तो शायाद सबसे पहले वे चर्च के खिलाफ ही उठ खड़े होते ।

अब असली बात मीडिया की। 25 दिसंबर को भारत का इलेक्ट्रोनिक मीडिया शेष सारे काम छोड कर क्रिसमस के छोटे बडे जश्न दिखाने में ही जुटा रहा। मीडियाा ने ऐसा वातावरण बनायाा मानों 120 करोड़ लोगों का देश क्रिसमस मनाने में ही लगा हुआ है। जो केवल मीडिया देख कर अनुमान लगायेगा वह तो यही सोचेगा कि क्रिसमस भारत का राष्ट्रीय पर्व है। मीडिया ने बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की उस शहादत पर नगमें गाना जरूरी नहीं समझ्ाा जिसके कारण हिन्दुस्थान आज भी हिन्दुस्थान के रूप में ही बचा हुआ है। इस मीडिया के लिए इन दोनों बालकों की ऐतिहासिक शहादत बेमानी हो गई और क्रिसमस का सांता क्लाज इनका नायक बन गया । भारत की पहचान जोराबर सिंह और फतेह सिंह से बनती है, सांता क्लाज से नहीं । यह तो तय है कि मीडिया के मालिक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि भारत बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह का देश है। लेकिन आखिर क्या कारण है कि वे फिर भी 25 दिसम्बर को सारा दिन कंधो पर सांता क्लाज को लेकर घूमते रहे। उनका कैमरा एक बार भी सरहिंद की दीवार की ओर नहीं घूमा जहां इन दोनों बालकों ने धर्म का शंख नाद किया था। कारण स्पष्ट है कि ये मालिक भारत की पहचान और अस्मिता बदलना चाहते हैं। इस षड्यंत्र को पहचानना होगा, तभी इसका मुकाबला किया जा सकेगा।●